ॐ

भगवद्भक्तिः कर्तव्या जन्मतो मरणावधि ।
भक्त्या ज्ञानं स्वयं लब्धमितिवेदानुशासनम् ॥

* शब्द सदाचार संग्रह *

प्रकाशक

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी) प्रांत पंजाब

प्रथमावृत्ति २००० | सन् १६२६ | मूल्य ~)।

ओ३म्

* विज्ञान का चर्चा *

मंगलाचरण ।

श्री गुरु परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सानिध्य-मात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥
ओंकार मंगल सदा विनवौं बारम्बार ।
परमानन्द सरूपं निज ज्ञानं दातार ॥
मो नमो गोविन्द गुरु विनवो अभिजन सोय ।
पहले भये प्रणाम तिन नमो जो आगे होय ॥
मो नमो श्री राम जू सत् चित् आनन्द रूप ।
जेहि जानै जग स्वप्नवत् नाशत भ्रम तम कूप ॥
सी देहु उदारता करि करुणा प्रभु मोहि ।
सबकूं देखूं एक सम कभी न भूलूं तोहि ॥
नारायण दो बात को दीजै सदा विसार ।
करो बुराई और ने आप कियो उपकार ॥

दो बातन को भूल मति जो चाहे कल्याण ।
नारायन इक मौत को दूजे श्री भगवान ॥
तुलसी बिलम्ब न कीजिये भजिये राम सुजान ।
जगत् मंजूरी देत है क्यों राखैं भगवान ॥
राम झरोका बैठ कर सब का मुजरा ले ।
जैसी जा की चाकरी वैसा ही फल दे ॥
तुलसी या संसार में पांच रत्न हैं सार ।
सन्त मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार ।
तुलसी या संसार में कर लीजे दो काम ।
देने को टुकड़ा भलो लेने को हरि नाम ॥
दुर्बल को न सताइये माटी जाकी हाय ।
बिना श्वास की खाल ते लोह भस्म हो जाय ॥
भजन करो मन बश करो यही बात है तन्त ।
काहे को पढ़ पढ़ मरो कोटिन ज्ञान ग्रन्थ ॥
ज्ञानी सोऽहं कहत हैं योगी जन ओंकार ।
भगत राम को भजत हैं साधो करो बिचार ॥
दादू सिर जन हार के केते नाम अनन्त ।
मन आवै सोई लीजिये वा साधु सुमरे सन्त ॥
सुन्दर मानुष देह की महिमा वर्णे साध ।
तामें वश कर पाइये पूर्ण ब्रह्म अगाध ॥

श्वासों की कर सुमरणी अजपा का कर जाप ॥
ब्रह्म तत्व का ध्यान धर सोहं आपे आप,

सवैया

अवधि अपार मम रूप ते तरंग तुल्य ।
विधि हरि हर आदि जेते रूप धारी हैं ।
देव दैत्य पन्नग पिशाच चराचर जेते,
जहां लग जग जाल माया न पसारी है ।
सब को अधार आप निराधार आतम सो,
सत् चित आनन्द स्वरूप तें सो न्यारी ।
साक्षी एक सम रस व्यापक अकाशवत्,
पूर्ण प्रकाश ताहे वन्दना हमारी है ॥

मति हीन विवेक विना नर जो,
औरु साजि मतंग सो ईंधन ढोयो ।
कंचन भाजन धूरी भरि नर,
मूढ़ सुधा रस से पग धोयो ।
वेहित काग उड़ावन कारण,
डारि मणि मन मूर्ख रोयो ।
ऐसे ही देह दुर्लभ्य विषय रस,
पाय अजान अकारथ खोयो ॥

गगन के मण्डल में चन्द्रमां मसालची किये,
लाख तारे वाके दिपक दरबार हैं।
ब्रह्मा वज़ीर विश्णु कारदार शंकर दीवान,
जाके गणेश चोबदार हैं।
शील हू की लक्ष्मी जो सदा अंग संग रहे,
कुबेर जैसे भण्डारी अरु इन्द्र जमींदार हैं।
कहै अवधूत प्यारे समझ के बिचार देखो,
राजान पति राजा महाराजा करतार हैं॥

मात तुही गुरु तात तुही मम भ्रात तुही प्रभु धान्य भण्डारो।
ईश तुही जगदीश तुही मम शीश तुही प्रभु राखन हारो॥
राव तुही उमराव तुही मन भाव तुही मम नैन को तारो।
सार तुही करतार तुही परिवार तुही घर बार हमारो॥

मोर मुकुट वारो धरै भेष नटवारो,
छोटी लो ललट वारो जगत उजारो है।
सांवरे वर्ण वारो मुरली धरन वारो,
सङ्कटहरन वारो नन्दजू को प्यारो है॥
दानव दलन वारो छवि को छलन वारो,
मटक चलन वारो पोष उर धारो है।

कंस को दलन वारो भृगुलता लत्त वारो है,
मोरपङ्ख वारो रखवारो सो हमारो है ॥
दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे,
दूर पास तो तिहारे आम खास तो तिहारे हैं।
दीन तो तिहारे मति हीन तो तिहारे,
जो नवीन तो तिहारे प्राचीन तो तिहारे हैं।
क्रूर तो तिहारे गुण पूर तो तिहारे,
राचे नूर तो तिहारे सांचे शूर तो तिहारे हैं।
पायक तिहारे यश गायक तिहारे,
हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं।

शब्द

चरखले वाली तेरा चरखा बोले राम नाम भज तुही ॥ टेक ॥
चरखा तेरा रंग रंगीला पीढ़ा लाल गुलाल।
कातन वाली श्याम सुन्दरी मुड़ तुड़ घाले तार ॥
बन जाई बन ऊपजी बन ही हमारो बास।
एक अचम्बा मैं सुना बेटी ने जायो बाप ॥ २ ॥
बेटी बोली बाप से अनजाया बर ला।
अनजाया वर ना मिले हमरा तुमरा व्याह ॥ ३ ॥
ज्येठाणी मांढा रचा द्यौराणी के व्याह।
नणदेइया चौरी चढ़ा देवरिया फेरे खाय ॥ ४ ॥

रुई पिनावन मैं गई सुन पिन हारे बात ।
रोम रोम मेरा पीन दे मेरे सतगुरु का परताप ॥५॥
चरखा २ सब कहैं चरखा लखा न जाय ।
चरखा लखिया दास कबीरा आवागमन मिट जाय॥६॥

शब्द

चरखा चलता नाहीं रे मेरा चरखा हुआ पुराना ॥ टेक ॥
पग खूटा दोउ हिलने लागे बीच मण्डला ढलकाना ।
सभी पंखड़िया पड़गई ढीली चलता नहीं मन माना ॥१॥
नया चरखला रङ्गा चङ्गा सब का चित्त चुरावे ।
जब चरखे का रंग उतर गया देखा हूं ना भावे ॥२॥
रसना तकली ऊबल खागई कहो कैसे कर छूटे ।
शब्द तार सीधा नही निकसे घड़ी घड़ी पै टूटे ॥३॥
मोटा महीन काटलो कुडियां कर अपना सुलझेड़ा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो चेतो क्यों न सवेरा॥४॥

शब्द

चरखा तोही अजब मिला तू तो कात सुहागन नार ॥ टेक ॥
कारीगर ने घड़ा चरखला चौंसट बंध लगाय ।
पूर्व जन्म से तोहे मिल योहै बाते न मन हर्षाय ॥१॥
शील धर्म व्रत नेम खूंटड़ो सुन्दर ना हिल जाय ।
चित जतनी से बीस पंखड़ी चौकस बन्द लगाय ॥२॥

मन माल है न त्याग बावरी मत की नाह करांय।
तप तकला और दया दमड़का चरखा चित्त बनाय॥३॥
राम नाम की तार बाँध ले सुरता मत गरमाय।
शम्भु नाथ की नाव झोंझरी सत्गुरु पार लगाय॥३॥

शब्द

चरखा हालन लागा सारा तैंने कैसी खराद उतारा॥ टेक॥
कारीगर जहां घड़ने बैठा वहां घोर अंधियार।
ले औजार साल सब कीने मंझा ठीक समारा॥१॥
नौ दस मास में घड़ कर देता ना कुच लेत विचार।
वहत्तर जिस में छेकी कोठरी बीच रखा गलियारा॥२॥
ठोक ठोक तयार किया जब पृथ्वी बीच उतारा।
चरखला वाली के मन भाया सबको लगा पियारा॥४॥
अंत समय चर्खे की आई आया हुकम करारा।
माधोदास कहत कर जोरी हो गया न्यारा न्यारा॥३॥

शब्द

चरखा चलता है दिन रैन निकसै वागल सूत हजारी॥टेक॥
निकसे तार पवन से पतला, धूवां से अधिकारी।
जोवन बांध जुगत से कातै ऐसी चतुर नारी॥१॥
राम नाम का खूंटा रोप्या सुरता माल पसारो।
सभी पखड़ियां चलने लागी अपनी अपनी बारी॥१॥

तीन महल पर नौ दरवाज़ा तेरह महल परवारी।
सोला महल पर चरखा चाले कातै हर की प्यारी ॥६॥
नाथ गुलाब मिले गुरु पूरे हर चरणन बलि हारी।
भानी नाथ शरण सत्गुरु की गरुड़ चढ़े गिरधारी ॥ ४ ॥

शब्द

दीना नाथ दया निधि स्वामी, कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं।
श्री गङ्गा चरणों से निकसी, शूचो नीर प्रभु कहां से लाऊं।
कामधेनु कल्प वृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदार्थ भोग लगाऊं।
चार वेद तुम मुख से भाषे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं॥
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदङ्ग क्या शंख बजाऊं।
कोटि भानु थारे नख की शोभा, दीपक ले प्रभु कहां दिखाऊं।
लक्ष्मी थारे चरणन की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेट चढाऊ।
तुम तिरलोकी के करता हरता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं॥
सूरश्याम प्रभु विपत विडारन, मन बांछित फल तुमही से पाऊं।

शब्द

भजन बिन बावरे तैंने हीरा सा जन्म गंवाया॥ टेक॥
कभी न आया सन्त शरण में ना कभो हरि गुण गाया।
यह २ मरा बैल की न्याईं सोय रहा उठ खाया॥ १॥
ये संसार हाठ वनिये की सब जग सौदा आया।
चातर माल चौगुना कीना मूखं मूल ठगाया॥ २॥

यह संसार फूल संभल का सूवा देख लुभाया।
मारो चौंच रुई निकस्याई मुण्डी धुन पछताया ॥ ३ ॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछु ना आया ॥४॥

शब्द

में तैरा स्वामी मुझे ना दिल से भूल ॥ टेक ॥
तुही धरन में तुही गगन में तू मूलन का मूल ॥ १ ॥
तुही डार में तुही पात में तुही रंगीला फूल ॥ २ ॥
गोपीचन्द भरथरी राजा सिर में डारी धूर ॥ ३ ॥
दास कबीर शरण तेरी आया होवे अर्ज कबूल ॥ ४ ॥

शब्द

बंगला भला बना दरवेश जामे नारायण परवेश ॥ टेक ॥
पांच तत्व की ईट बनाई तीन गुणों का गारा।
छत्तीसों की छात बना कर चिन गया चिनने हारा ॥१॥
इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थंबा।
आवत जावत कोऊ न जाने देखो बड़ा अचम्बा ॥ २ ॥
इस बंगले में चौपड़ मांडो खेलें पांच पचीस।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥ ३ ॥
इस बंगले में पातर नाचे मुनवा ताल लगावे।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ॥ ४ ॥

कहें मछन्दर सुन बाले गोरख, जिन यह बंगला गया।
इस बंगले के गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥ ५ ॥

शब्द

दाता एक राम भिखारी सारी दुनियां ॥ टेक ॥
राजा चढ़े रण घन दुर्जन धुनियां ।
समर समूह पै दोऊ ओर सुर मुनियां ॥ १ ॥
चोर चले चोरी करण ठग ठान ठनियां।
साहूकार रोकड़ बांधे लाद चले वनियां ॥ २ ॥
जोगी जती जोग साधें जपैं माला मनियां।
अंजली पसार मांगे वहैं ज्ञानी गुनियां ॥ ३ ॥
कोई नाचै गावे कोई तोड़े तान तनियां।
भजन भरोसे भीषण दास उत मुनियां ॥ ४ ॥

शब्द

सिया रघुबीर भरोसो ऐसो ॥ टेक ॥
वारि न बोरि सक्यो प्रहलादहि पावक नाहिं जरयो सो।
हिरणा कुश बहु भाँति सतायो हठ कर वैर करयो सो ॥ १ ॥
मारयो चाहे दास नर हरि को आपहि दुश्ट मरयो सो ।
मीरां के मारण के कारण पठयो जहर खरयो सेा ॥ २ ॥
राम कृपा ते अमृत ह्वगयो ताको हंस हंस पान करयो सो ॥३॥
द्रुपद सुता को चीर दुःशासन राज सभा पकरयो सो ।

ऐंचत ऐंचत भुज बल हारे नेक न अंग उघरयो सो ॥ ३ ॥
भारत में भंवरो के अण्डा कोटिन दल बटरयो सो ।
राम नाम जब पक्षि टेरयौ घंटा टूट परयो सो ॥ ५ ॥
लंका जारि अंजनी नन्दन देखत पुर सगरयो सो।
ताके मध्य विभीषण को गृह राम कृपा उबरयो सो ॥ ६ ॥
रावण सभा कठिन प्रण अगद हिय धर हरि सुमरयो सो ।
मेघनाथ सम कोटिन योधा लागे पग न टरयो सो ॥ ७ ॥
तुलसीदास विश्वास राम पद जो नर नारी करयो सो ।
और प्रभाव कहां लग बरणों जेहि यमराज डरयो सो ॥ ८ ॥

शब्द

यह ऋतु रूस रहन की नाहीं ॥ टेक ॥
बर्षत मेघ मेदिनो के हित प्रीतम हर्ष बढाई ॥
जो बेली ग्रीष्म ऋतु जरहिं ते तरवर लिपटाई ॥
उमड़ी नदी प्रेम रस माती सिन्धु मिलन को जाई ॥
सूर दास उठि चली राधिका दे दूती गल बाहीं ॥

शब्द

नाथ जू अब के मोय उभारो ॥ टेक ॥
पतितन में विख्यात पतित हूं पावन नाम तिहारो ॥
बड़े पतित नाहिन पासंग हूं अजा मेल कौन बिचारो ॥

भाज्यो नरक नाम सुनि मेरो यमने दियो हठ तारो ॥
क्षुद्र पतित तुम तारे रमा पति अबन करो जिय गारो ॥
सूर दास सांचो तब माने जब होय मम निस्तारो ॥

शब्द

छबि दिखला जा प्यारे मोहना मैंनू बंशी दी तान सुनाजा ॥टेक॥
तैनूं ब्रजदीयां नारियां प्यारियां वे,
ओत्थे डुडियां कुब्त्रियां तारियां वें ।
कभी भुल्ल के पंजाब विच आजा मोहना ॥ १ ॥
तैनू मेरी जेइयां बहतेरियां वे,
पर मैंनूं इक टंगा टेरियां वे ।
मेरी ततड़ी दी प्यास बुझाझा मोहना ॥ २ ॥
तू घर आ मेरे ब्रज बासिया वे,
बन्दी तेरे दरश दी प्यासियां वे ।
ऐसी प्यासी नू पानी पिलाजा मोहना ॥ ३ ॥
मेरे ऐबों पै रुख ना दे साइयां वे,
मेरी माफ कर सब ही बुराइयां वे ।
चरण दास नू पार लगा जा मोहना ॥ ४ ॥

शब्द

आजारे मोहन आजा लीला मय लीला दिखा जा ॥ टेक ॥

शुभ गीता का ज्ञान सुना जा, कर्म वीर बनना बतला जा।
वीणा ध्वनि सुना जा ॥

अभिमानी का मान घटा जा, निरंकुशों की शान गटा जा।
विमल ज्ञान भण्डार लुटा जा, प्रेम पीयूष पिलाजा ॥ २ ॥
भारत को स्वातन्त्र्य दिला कर, दास प्रथा का अंत कराकर।
मातृ भूमि को धीरज देकर, कुछ तो दुख मिटा जा ॥ ३ ॥
भीख मांगना भारत छोड़े, पाप कर्म से मुख को मोड़े।
सत्य धर्म से नाता जोड़े, जीवन ज्योति जगा जा ॥ ४ ॥
गोकल वृन्दावन में आकर, दधि माखन का चोर कहा कर।
दुध दही का स्रोत बहा कर ऊधम फेर मचा जा ॥ ५ ॥
वह प्राचीन उमंग नहीं है निर्मल प्रेम तरङ्ग नहीं है।
सच्चा सुख दिखता नहीं है, किंचित् दया दिखा जा ॥ ६ ॥
मांगे हम लक्ष्मी मत देना, यश वैभव मांगे मत देना।
केवल मंजुल रूप दिखा कर, किंचित हृदय जुड़ा जा ॥ ७ ॥
माधव जो तू नहीं आवेगा. इस प्रकार जो तरसावेगा।
निश्चय ही तू पछतावेगा, सुनयी नेह निभाजा ॥ ८ ॥

शब्द

पितु मात सहायक स्वामी सखा तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिन के कछु और अधार नहीं तिनके तुम ही रखवारे हो ॥
प्रति पाल करो सगरे जग के, अतिशय करुणा उर धारे हो।

भूली हैं हम ही तुम को तुम तो हमरी सुधि नाहीं बिसारे हो ॥
महाराज महा महिमा तुमरी समझे बिरले बुध वारे हो ॥
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे मन मन्दिर के उजियारे हो ।
यह जीवन के तुम जीवन हो इन प्राणन के तुम प्यारे हो ॥

शब्द

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल ॥ टेक ॥
काम क्रोध को पहिर चोलना कण्ठ विषय की माल ॥ १ ॥
महामोह के नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल ॥ २ ॥
तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि के ताल ॥ ३ ॥
माया को कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ ४ ॥
सूरदास की सभी अविद्या दूर करौ नन्दलाल ॥ ५ ॥

शब्द

चरखा परे हटा ले री मेरी सुरत राम से लागी ॥ टेक ॥
कैसे कातूं कातना उमर मेरी है काची ।
दोनों पैरूं बांध घूंघरु सतगुरु आगे नाची ॥
काहे से कातुं कातना ना बोई लारे बाड़ो ।
हमे और की कहा पड़ी मैं आप ही फिरूं उघाड़ी ॥
चरखा छोड़ा पीढा छोड़ा छोड़ा कातनो सूत ।
संग की सुहली सगरी छोड़ी सगा सास का पूत ॥

मीराँ माता से कहै सुन माता मेरो भागी।
भजन करन से कुल उभरत है भजन करत बड़ भागी।

शब्द

मेरा मन बानियां रे अपनो बान कभी ना छोड़े ॥ टेक ॥
हेर फेर के दोनों पलड़े, अन्दर काणी डोडी।
मन में झूट कपट हिरदे में, हाट चौसले मांडी ॥१॥
पूरे बाट परे सरकावे, कमती बाट टटोले।
पासंग माहीं डाडी मारे, बेगा बेगा बोले ॥ २ ॥
घर तेरे में कुबुध किराड़ो, छिन छिन में चित चोरे।
कुनबा तेरा बड़ा हरामी, अमृत में विष घोले ॥३॥
जल में तूही थल में तूही, घट घट में हरि बोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, भरम बन्धा जग डोले ॥४॥

शब्द

लाडो मेंडुकी री तू तो पानी में की रानी ॥ टेक ॥
कक्का तेरा भैया भतीजा चील तेरी दौरानी।
बगला तेरा छोटा देवर बाय देखि मुसकानी ॥ १ ॥
अन्धे ने मणिके को बींधा बिन अंगुली सुई चलानी।
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के बाणी ॥२॥
चार चिरैयां मङ्गल गावें टौंटा ताल बजावे।
सूतन पहर गधैया नाचे ऊंट बिसन पद गावे ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो यह पद हैं निर्वाणी ।
जो इस पद की निन्दा करे है वाको नर्क निशानी ॥ ४ ॥

शब्द

हो नाथ म्हारो कांई बिगरेगो नाथ जी ।
हो मेरे स्वामी लाजैगो बिरद तिहारो ॥ टेक ॥
औरां के पति एक है मैं पांच पत्यां की नारि जो ।
उन पाँचों नै त्याग दई हूं थे मत त्यागो बनवारी ॥१॥
कैरू कपट रच्यो दुर्योधन मन में यही तो बिचारी जी ।
जीत लिये पांचों पाण्डव छुटी द्रोपदी नारी ॥ २ ॥
केश पकड़ कर ल्यायो सभा में त्रास तो दिखायो मोहे भारी जी ।
दुर्योधन बद नीत भयो है देखत चाहे उघारी ॥ ३ ॥
अब तक नाथ मोरो कछु नहीं बिगो द्रोपद दीन पुकारो जी ।
सहाय करो प्रभु थे भगतां की, कहां गयो बेर तो हमारी ॥४॥
गद गद बैन नैन जल छायो कृष्ण हो कृष्ण पुकारी जी ।
फिर आवोगे लाज मरोगे दासी को देखोगे उघारी ॥५॥
सुन बिनती प्रभु आय गये तब नख पर गिरवर धारी जी ।
चीर में प्रवेश भयो है खैंचत खैंचत हारी ॥ ६ ॥
महा भारत में कथा लिखी है श्री वेदो व्यास जी उचारी जी ।
कहै कालूराम सुनो भाई घन्ना आ पहुंचे बनवारी ॥ ७ ॥

शब्द

ऊधो कहत न कछु बन आवे ॥ टेक ॥
सिर पर सौत हमारे कुबजा चाम के दाम चलावे ॥ १ ॥
उन कछु मन्त्र पढयो चन्दन में ताते श्याम ही भावे ॥ २ ॥
अपने रंग ही रंगयो सांवरो शुक ज्यों वैठ पढावे ॥ ३ ॥
छांडयो नेह हेत गोकुल स्यों लिख २ योग पठावे ॥ ४ ॥
विसरेउ शेष असुर की दासी अब कुल वधु कहावे ॥ ५ ॥
ज्यों नटनो लघु हाथ लकुट लै कपि ज्यों नांच नचावे ॥६॥
सूरदास प्रभु जरी बहुत दुःख ता पर लौन लगावे ॥ ७ ॥

शब्द

सो नैना मेरे तुरिया तत पद अटके ॥ टेक ॥
सुरत निरत की गम नहीं सजनी जहां मिलन को लटके ॥
भूलो जगत बकत कछु ओरे बेद पुराणन ठटके ॥
प्रीति रीति की सार न जानै डोलत भटके भटके ॥
किरया कर्म भर्म उरझेरे ए माया के झटके ॥
ज्ञान ध्यान कछु पहुंचत नाहीं राम रहीमा फटके ॥
जग कुल रीति लोक मर्यादा मानत नाहीं हटके ॥
चरण दास शुक देव दयासों त्रैगुण तज के सटके ॥

शब्द

ऊधो अब नहीं श्याम हमारे ॥ ठेक ॥

मधु बन बसत बदल से लीने माधो मधुप तिहारे ॥ १ ॥
इतनेहीं दूर भये कछु और हौं जो जोई मगु हारे ॥ १ ॥
कपटी कुटिल काक कोयल ज्यों अन्त भये उड़म्यारे ॥ ३ ॥
रस ले भंवर जाय स्वारथ हित प्रीतम चित न बिसारे ॥४॥
सूरदास तिन सौं का कहिये जे तन हुं मन कारे ॥ ५ ॥

शब्द

ऊधो मन तो नहीं हैं दस बीस,
एक मन को लै गयो सांवरो कौन भजै जगदीश ॥ टेक ॥
भई अति शिथल सभी माधव बिन जैसे देह बिन शीश ।
श्वास अटक रहे आशा लगि जीवहू कोठि बरीस
तुम तो सखा श्याम सुन्दर के सकल योग के ईश ।
सूरदास रसिक की बतियां पुरवो मन जगदीश

शब्द

टुक रंग महल में आव कि निर्गुण सेज बिछी ॥ टेक ॥
जहां पवन गवन नहिं होय जहां जाय सुरति बसी ॥
जहं त्रयगुण बिन निर्वाण जहां नहीं सूर शशी ॥
जहं हिल मिल के सुखमान मुक्ति की होय हंसी ॥
जहं पिय प्यारी मिलि एक कि आशा दुई नशी ॥
जहं चरणदास गलतान कि शोभा अधिक लसी ॥

शब्द

सुन सुरत रङ्गीली हे कि हरिसा यार करो ॥ टेक ॥

जब छूटे बिघ्न बिकार कि भव जल तुरत तरो ॥
तुम त्रयगुण छैल बिसारि गगन में ध्यान धरो ॥
रस अमृत पीवो हे कि विषया सकल हरो ॥
करि शील संतोष शङ्गार क्षमा की मांग भरो ॥
अब पांचों तजि लगवार अमर घर पुरुष वरो ॥
कहैं चरणदास गुरु देखि पिया के पांव परो ॥

शब्द

तुही एक अनेक भयो है प्रभु जी अपनी इच्छा धार ॥टेक ॥
तुही सिरजे तूही पाले तूही करे संहार ।
जित देखूं तित तूही तू है तेरा रूप अपार ॥ १ ॥
तूही रामनारायण तूही तूही कृष्ण मुरार ।
साधों की रक्षा के कारण युग २ ले अवतार ॥ १ ॥
तुही आदि अरु मध्य तुही है अन्त तेरो उजियार ।
दानव देव तुम ही से प्रकटे तीन लोक विस्तार ॥ ३ ॥
जल थल मे व्यापक है तूही घट २ बोलन हार ।
तो बिन और कौन है ऐसो ज्यासों करूं पुकार ॥ ४ ॥
तूही चतुर शिरोमणी है प्रभु तूही पतित उधार ।
चरणदास सुखदेव तूही है जीवन प्राण अधार ॥ ५ ॥

प्रार्थना

अयि विभो करुणेश स्वामिन् कथितोऽसि दया निधे ॥ टेक ॥

देहि निज पद पद्म भक्तिं तारयाशुभवाम्बुधे ॥
यादवाभि जनेन पूर्णे नाविता वसुधा त्वया ॥
नाशता शिशुपाल कंसजरां सुताद्य सुरामृधे ॥
त्वद्वियोग मवाप्य भारत भूमि रधुना पीडिता ३
पात्रता मुपयास्यतीश कदा तवानुग्रहविधे ॥

प्रार्थना

हे विभो आनन्द सिन्धो मेच मेधा दीयताम ।
यच्च दुरितं दीन बन्धो तच्च दूरं नीयताम ॥
चञ्चलानि चेन्द्रियाणि मानसं मे पूयताम् ।
शरणं याचे तावकीन सेवक अनुगृह्यताम् ॥
त्वयि च वीर्यं विद्यते यत् तच्च मयि निधीयताम् ।
याच दुर्गुण दीनता मयि सानु शीघ्र क्षीयताम ॥
शा र्यं धैर्यं तैजसं च भारते चेक्रीयताम् ।
ह दयामप अयि अनादे प्रार्थना मम श्रूयताम् ॥

प्रार्थना

भगवन् त्वदीय भक्तिं मनसा सदा स्मरेयम् ।
वेदोक्त धर्म कार्यं नक्तन्दिनं विधेयम ॥ १ ॥
सङ्गः सदा सुधीनां पन्थाश्च आर्याणाम ।
सद्भावनामृषीणां स्वान्ते सदा भरेयम ॥ २ ॥
रागा हरन्ति देहं प्रबलाः शरीर मध्ये ।

ब्रह्मचर्यमौषधंच पेयं सदा वरेण्यम ॥ ३ ॥
बालै रमूल्य बेला खेलासु नाप्रेया ।
ज्ञानं सदा दरेयं धर्मं सदा चरेयम ॥ ४ ॥

गीतिका

वन्दे मुकुन्द देवं धृतया दवेन्द्र देयम ॥ १ ॥
जनकेन कंस भयतो नीतं तु गोप गेहम ॥ २ ॥
खल धेनुकाव कारिं व्योमासुरादि कालम ॥ ३ ॥
बंशी विभूषितोष्ठं हृन्मानसे मरालम ॥ ४ ॥

गीतिक

भगवन्त मनन्त मजं भज रे, मनसा विषयेषु रतिं त्यजरे ॥टेक॥
सुतदार धनादि विहाय चलं, गुरु मात्म विदं शरणं व्रज रे ॥१॥
शृणु शास्त्र रहस्य कथा त्रिमला, हृदये गत मोह मलं मृजरे ॥२॥
निखिलं जगदेतदवेहि मृषा, परमात्मनि नित्य मतिं सृजरे ॥३॥
परि हाय मनो भ्रम जाल मिदं, हरिमेक मुदारमतिं यजरे ॥४॥

शब्द

श्याम का संदेशा ऊधो पाती लेके आयो री ॥ टेक ॥
पाती तो उठाय लोनी छाती सौं लगाय लीनी ।
घूंघट को ओट देके ऊधो समझायो री ॥ १ ॥
बसती उजाड़ दीनी उजड़ी बसाय लीनी ।
कुब्जा पटरानी कोनी मोहे ना सुहायो री ॥ २ ॥

सूर श्याम जू के आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो ।
जीवत खसम किन भसम रमायो री ॥ ३ ॥
कहा करूं सुनो यह गोकुल हरि बिन न सुहायो ।
सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरत बिसरायो री ॥४॥

शब्द

जिस को तू नर तन मानत यह आप रूप भगवान है ॥ टेक ॥
अहंकार ने जब से घेरा कहन लगा मेरा और तेरा ।
भूल गया निज रूप अनेरा तू सवज्ञ सुजान है ॥ १ ॥
मैं हूं देह देह है मेरी केवल यही भूल है तेरी ।
पांच तत्व की यह तो ढ़ेरी जान क्यों भया अजान है ॥२॥
बुरि भली करणी जब करि है बन्धन में तभी तो पड़ि है ।
निष्क्रिय तो नहीं वछु डर है तो हे कर्म की आन है ॥ ३॥
सत् चित् आनन्द भाव संभारो पांच कोश ते होजा न्यारो ।
नाम रूप कछु नाहिं निहारो यहो तो निर्मल ज्ञान है ॥४॥

शब्द

बाणा बदलै सौ सौ बार बदलै बाण तो बेड़ा पार ॥टेक॥
सोना चांदी चौंच मंढ़ाई किया हंस की लार ।
काका बाण कुबाण न छोड़ें इत सत्संङ्ग लाचार ॥ १ ॥
युग युग सींचो दूध अरंड को लागैं नाहि अनार ।
चूर चूर कर डारो चन्दन तजै नहीं महकार ॥ २ ॥

सज्जन के मुख अमी बसत है जब बोलै तब प्यार।
दुर्जन का मुख बन्द कर रखियो भट्ठी भरे अङ्गार ॥ ३ ॥
अपनी करणी आप कहत हूं नहीं और सिर भार।
शम्भुदास वा घड़ी धन्य जब सुमरया सिरजन हार ॥ ४ ॥

शब्द

मेरे पिया आन मिले फागन में मेरे पूर्ण पिछले भागरी ॥ टेक ॥
जो पिया पाग रंगेंगे रंग में मैं भी चोर रंगूंगा संग में।
दोनों रंग लें एक ही रंग में धब्बा रहै ना दाग री।
ह्वै जाऊं निरदागन मैं ॥ १ ॥
अतर गुलाल ज्ञान की रोली फैंकत हैं पिया भर २ झोली।
सुन लो री मेरे संग की सुहेली सोवन में दो आगरी।
कछु नफा मिलै जागन में ॥ २ ।
ताल मृदङ्ग पखावज बाजै तत्व तमूरा सुर में गाजै।
मोहन के मुख मुरली साजै गावै छत्तीसों राग री।
सुन हो जाऊं वैरागन मैं ॥ २ ॥
फागन के दिन सुख से बीते हम हारी म्हारे बालम जीते।
गङ्गादास कहै हम भी बीते खेल चुके हैं फाग री।
काहा करें हंस कागन में ॥ ४ ॥

शब्द

हरि को सुमर संकट हरण ॥ टेक ॥

कोटि कष्ट निवार तारण जगपति पोषण भरण ।
भक्ति पूर्ण देखि निश्चल अननव बांधो परण ॥ १ ॥
अग्नि मैं प्रह्लाद राखो दियो नाहीं जरन ।
गिरि शिखर से डारि दीन्हों लगो करुणा करन ॥ २ ॥
दीन जानि संभार लीन्हों कियो ठाढो धरन ।
खम्भ बांधो खड्ग काढो दुष्ट लागो अरन ॥ ३ ॥
अब बता तेरोराम कित है गहो वाकी शरन ।
ढ़ीठ हो प्रह्लाद भाष्यो डारि शंका डरन ॥ ४ ॥
मोमे तोमे खड्ग खम्भ में मध्य नारि नरन ।
खम्भ फाड़ कर भये परगट धरो नरसिंह वरन ।
मोहिं गुरु शुकदेव कहिया सेव सोई चरन ।
चरणदास उपासना दृढ होय तारण तरन ॥ ६ ॥

शब्द

कृष्ण खड़े आंगन में कैसे सोय रही बृज नार ॥ टेक ॥
जिस मोहन पर फिरे दीवानी मेरी सुनी न मन की मानी ।
वही आये हैं सो हम जानी खड़े पुकारैं द्वार ॥ १ ॥
सोऽहं सोऽहं धूम मचाई पड़ा गजब नहीं देत सुनाई ।
श्याम सुन्दर हैं राम दुहाई टेरत भई बड़ी बार ॥ २ ॥
चाल अनोखी चितवन वाकी रस भरे नैन मनोहर झांकी ।
जग मग ज्यति जरे नयनों की खिल रही अजब बहार ॥३॥

सेज बिछी है शून्य अटारी उठ शृङ्गार कर निर्भय प्यारी ।
परमानन्द हो खोल किवाड़ी क्यों बैठी मन मार ॥ ४ ॥

शब्द

दलाली लालन की म्हारे सुतगुरु दई है बताय ॥ टेक ॥
लाल लाल सब कोई कहें रे सब की गठरी लाल ।
खोल गांठ देख्यो नहीं या विधि रह्यो है कंगाल ॥ १ ॥
दिल्ली के बाजार में लाल ही लाल बिकांय ।
सुगरे सुगरे सौदा करते नुगुरे फिर फिर जांय ॥ २ ॥
लाल पड़्यो मैदान में रे खलक उलाँघे जाय ।
नुगुरे ठोकर मारिया ये सुगरे न लियो उठाय ॥ ३ ॥
ज्यों महंदी के पात में रे लाली रही समाय ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो आवागमन मिट जाय ॥ ५ ॥

शब्द

अलख संग मिलियो रे तुम चलो दिवाने देश । टेक ॥
सन्त सदा उपदेश बतावें घट अंदर दीदार लखावें ।
तन मन अर्पण करियो रे ॥ १ ॥
पहले पहर सुघर नर जागे चार चौक अनहद से आगे ।
अब चल कबहु न चलियो रे ॥ २ ॥
शब्द विहंगम बाजैं तूरा कोटि भानु जहां भभके नूरा ।
दंक नाल सुध करियो रे ॥ ३ ॥

सुखमन देश विहंगम सेरी माया गस्त फिरे चहुं फेरी ।
भरम भूल मत रहियो रे ॥ ४ ॥
इस पद का कोई भेद निहारे कहै कबो रैदास विचारे ।
नाम को व्योहारी कोई मिलियो रे ॥ ५ ॥

शब्द

मधुकर कौन मनायो माने॥ टेक ॥
अविनाशी अति अगम अगोचर कहा प्रीति रस जाने ॥ १ ॥
सिखवो जाय समाधि की बातें जहां हों लोग सयाने ॥२॥
हम अपने व्रज ऐसे ही बसैं हैं विरह वाय बौराने ॥ ३ ॥
जाके तन धन प्राण सूर हरि मुख मुसकात बिकाने ॥४॥

सदाचार ।

मैत्री सद्भि समं कुर्यात् स्नेहं सत्सु तु सर्वथा ।
संसर्गं साधुभिः कुर्यादसत्ससगं परित्यजेत् ॥ १ ॥

श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ मित्रता करे, उन के ऊपर सब प्रकार से स्नेह रक्खे और मन बचन तथा कर्म से संसर्ग भी उन्ही का करै और नीच मनुष्यों का सग सब प्रकार से छोड़ दे ॥ १ ॥

सेवेत देव भूदेव बृद्ध बैद्य नृपा तिथीन् ।
विमुखान्नार्थिनः कुर्यान्नावमन्येत कानपि ॥२॥

देव, ब्राह्मण, राजा, वृद्ध, वैद्य तथा अतिथी लोगों की सेवा करे, याचक को निराश कर खाली न जाने दे । किसी की अवज्ञा न करे ॥ २ ॥

गुरुणां सन्निधौ तिष्टेत्सदैव विनयान्वितः ।
पाद प्रसारणादीनि तत्र नैव समाचरेत् ॥३॥

गुरू (पूज्य) लोगों के पास सदा नम्रता पूर्वक बैठे, उन के पास पाव पसार कर बैठना आदि अयोग्य कार्य न करे ॥ ३ ॥

अपकार परेऽपि स्यादुपकार परः पुमान् ।
आत्म वत् सकळान्पश्ये द्वैरिणो दूरतो वसेत् ॥४॥

अपकार करने वाले मनुष्यों के साथ भी सदा उपकार करे। सब को अपने सदृश जाने और द्वेषी से दूर रहे ॥ ४ ॥

न किञ्चिदात्मनः शत्रूनात्मानं कस्यचिद्रिपुम् ।
प्रकाशयेन्नापमानं न च निः स्नेहतां प्रभो ॥५॥

कोई मनुष्य हमारा बैरी है अथवा अमुक मनुष्य का मैं बैरी हूं ऐसा किसी प्रकार प्रकाशित न करै। किसी स्थान में अपना अपमान हुआ हो और अपने ऊपर स्वामी का स्नेह न हो इस को भी प्रकाशित न करै ॥ ५ ॥

नात्मानमुदके पश्येन्न नग्नः प्रविशेज्जलम् ।
तथा नाज्ञातगाम्भीर्यं न हिंस्र प्राणि सेवितम् ॥६॥

पानी में अपना प्रतिबिम्ब न देखै, नग्न हो कर जल में न धुसे। जिस की गहराई विदित न हो तथा जिस जल में मच्छादि हिंसक जीव रहते हों उस में न घुसै ॥ ६ ॥

काले हितं मितं सत्यं संवादि मधुरं वदेत् ।
भुञ्जीत मधुरं प्रायं स्निग्धं काळे हितं मितम् ॥७॥

बोलने के समय थोड़ा, हितकारी, सत्य, प्रसङ्ग के अनुसार और मिष्ठ बचन बोले। भोजन के समय अधिक रस वाले घी सहित और हितकारी पदार्थों का प्रमाणानुसार भोजन करै ॥ ७ ॥

न रात्रौ दधि भुञ्जीत न च निर्लवणं तथा ।
न मुद्ग सूपं ना चौद्रं न चाप्यघृत शर्करम् ॥ ८ ॥

रात्रि में दही न खाय, और बिना नमक के दही कभी नहीं खाय, तथा मूङ्ग की दाल, शहद, घी और शर्करा के बिना भी दही नहीं खाय ॥ ८ ॥

जनस्याशयमालक्ष्य यो यथा परि तुष्यति ।
तं तथैवानुवर्तेत परा राधनपांडितः ॥९॥

मनुष्यों के अभिप्राय को जान कर जो मनुष्य जिस प्रकार से प्रसन्न हो उसी प्रकार प्रवर्ते क्योंकि अन्य मनुष्यों को प्रसन्न रखना ही चतुरता है ॥ ९ ॥

नैकः सुखी न सर्वत्र विश्वस्तो न च शंकितः ।
नोद्यमे विरमेत्कापि हेतावीर्ष्येत्फले न तु ॥१०॥

जिस प्रकार सहाय बिना मनुष्य सुखी नहीं होता उसी प्रकार सब के ऊपर विश्वाश करने वाला अथवा सब के ऊपर सन्देह रखने वाला भी मनुष्य सुखी नहीं होता कभी उद्यम करने से खाली नहीं बैठना चाहिये किसी के सफली भूत उद्यम को देख कर उस पर ईर्ष्या करना नहीं चाहिये जो पुरुष ऐश्वर्यवान् के ऐश्वर्य को देख कर दुःख मानते हैं वे सदैव दुखी रहते हैं विद्वानों को यह बिचार करना चाहिये कि अमुक पुरुष को किस प्रकार और किस चतुरता से यह ऐश्वर्य प्राप्त

हुआ है उसी विद्या और उसी उपाय से हम भी धन उपार्जन करके संसार में अपना यश प्रकाश करें परन्तु चतुर जन किसी के संचित किये हुये धन की इच्छा न करें ॥ १० ॥

वेगान्न धारयेज्जातु मनो वेगान्वि धारयेत् ।
न पीड़येदिन्द्रियाणि नचैतानति लालयेत् ॥११॥

मल मूत्र अथवा अपान वायु आदि के वेगों को कदापि नहीं रोके मिन्तु काम क्रोधादिक मन के वेगों को रोकना चाहिये इन्द्रियों को पोड़ित नहीं करे ओर उन का बहुत लाड भी न करे ॥ ११ ॥

वर्षातपादिषु च्छत्री दण्डीरात्रौ भयेषु च ।
सोपानत्कस्तनुं रक्षेद्विचरे द्युगमात्रदृक् ॥१२॥

वर्षा अथवा धूप आदि में छत्र (छत्री) धारण कर चले रात तथाभय के समय हाथ में लकड़ी लेकर चले जूते पहरे रहे और देह की रक्षा करे आगे को चार हाथ पृथ्वी देख कर चले ॥ १२ ॥

नदींतरेन्न बाहुभ्यां नाग्नि स्कंध माभि व्रजेत ।
सन्दिग्धनावं वृक्षं च नारोहेन्दुष्ट यानकम् ॥१३ ॥

हाथों से नदी को नहीं तरे जहां अग्नि का समूह हो वहां नहीं जाय सन्देह युक्तवाहन पर नहीं चढ़ें और उन्मत्त हाथी के पास नहीं जाय ॥ १३ ॥

नासंवृतमुखं कुर्यात् सभायां च विचक्षणः ।
कासंश्वासं तथोद्गारं जृम्भणं क्षवथुं तथा ॥१४॥

श्रेष्ठ मनुष्यों की सभा में सन्मुख मुख करके खांसो, श्वास, डकार, जम्भाई, और छींक नहीं लेवे ॥ १४ ॥

नासिकां नविष्कुणीयान्नासीतोत्कटकः क्वचित् ।
नोर्ध्व जानुश्चिरं तिष्ठेन्न नखेन लिखेद्भुवम् ॥१५॥

सभा में बैठ कर कभी नाक को नहीं कुरैदे उकरू कभी नहीं बैठे क्योंकि इस प्रकार से बैठना हानि कारक है एक समय एक प्रतिष्ठित अंगरेज़ से पूछा कि तुम लोग नीचे को पैर लटका कर शौच क्यों जाते हो तो उन्हों ने उत्तर दिया कि "ऊकरू बैठ कर जाने में मनुष्य का दिमाग़ कमजोर होता है यह बात साइंस ने भी सिद्ध कर दी है" । हमारे हिन्दू वैदिक ग्रन्थों में भी यह बात लिखी है अतः ऊकरू बैठ कर शौचादि जाना हानि कारक है । अधिक देर तक घुटुएँ ऊचे करके नहीं बैठे और नखों से पृथ्वी कभी न खोदे ॥ १५ ॥

सम्मार्जनीरजो नैवदेहे दद्यत्कदाचन ।
न नखेन तृणंछिन्द्यान्नाच्छिष्टो ब्राह्मणं स्पृशेत् ॥१६॥

शरीर पर कभी बुहारी की धूल न पड़ने देवे नख से तृण को नहीं तोड़ै झूंठे मुख ब्राह्मण को स्पृश न करे ॥१६॥

नोपरक्तं न चोद्यन्तं नास्तं यातंदिवाकरम् ।

सर्वथा न समीक्षेत न जले प्रतिविंबितम् ॥१७॥

राहू से ग्रसित (ग्रहण के समय) उदय होते और अस्त होते समय सूर्य को न देखे पानो में सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ा होय उस को न देखे ॥ १७ ॥

नेक्षेत सततं सूक्ष्मं दीप्ता मेध्यांप्रियाणि च ।
पौरन्दरं धनुर्नैव दर्शयेत्कमपिक्वचित् ॥१८॥

सूक्ष्म प्रकाश युक्त अपवित्र और अप्रिय वस्तु को निरन्तर नदेखै ।आकाश में इन्द्र का धनुष तना होय उस को किसी समय भो किसी को नहीं दिखावे ॥ १८ ॥

नेच्छेद्बलवतायुद्धं न भारं शिरसावहेत् ।
गात्रं नादयेत्केशान् हस्तेन धुनुयान्न च ॥१९॥

बलवान के साथ लड़ाई करने की इच्छा नही करे, बोझ शिर पर न उठावे क्योंकि मस्तक पर बोझ उठाने से उस का असर दिमाग़ पर बुरा पड़ता है। यह बात अपने शास्त्रों में निषिद्ध है । भारत वर्षीयों ने अंगरेज़ों को कोट पतलून आदि बुरी बातों का तो अनुकरण किया है जो कष्ट देने वाली हैं । और टोप आदि जो लाभ दायक वस्तुयें हैं उन का नहीं किया टोप के पहनने से आंखों से सूर्य का चौंध नहीं पड़ता इस लाभ के सिवाय यह भी एक और बड़ा लाभ है कि जो हमारे ग्रन्थों में लिखा है कि शिर पर बोझ न उठावे वह

बात भी पूर्ण होती है क्योंकि साफा आदि बान्धना शिर पर बोझ रखने में सहायक होता है और टोप बाधक। जब टोप पहनेंगे तो आप ही शिर पर बोझ नहीं रखा जा सकेगा। हाथ इत्यादि ठोक कर शरीर का शब्द न करै हाथों से केशों को नहीं हिलावे ॥ १९ ॥

नगच्छेत्पूज्ययो र्मध्ये दम्पत्योरन्तरेण च।
रिपोरन्नं न भुञ्जीत गणिकान्नमपि क्वचित् ॥२०॥

दो पूज्य मनुष्य अथवा स्त्री पुरुष खड़े होंय उन के बीच में हो कर नहीं जाय शत्रु अथवा वेश्या का अन्न कदापि नहीं खाय ॥ २० ॥

प्रतिभू न भवेत्क्वापि न च साक्षी वृथाभवेत्।
द्यूतं न धार्येज्जातु द्यूतं दूरात्परित्यजेत् ॥२१॥

किसी समय भी किसी का प्रतिभू नहीं बने किसी का वृथा साक्षी न होय। किसी की धरोहर न रक्खे और जहां जुआ होता हो उस को दूर ही से छोड़ देवै ॥ २१ ॥

विश्वासं नाचरेत्स्त्रीणां ताः स्वतंत्रा न चारयेत्।
रक्षणीया सदा यत्नाद्यौवनै तु विशेषतः ॥२२॥

स्त्रियों का विश्वास कदापि नहीं करै, स्त्रियों को स्वतन्त्र नहीं रक्खे अधिक प्रयत्न से स्त्रियों की रक्षा करे उस में भी युवावस्था में विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिये ॥२२॥

नाभिन्ने शयने स्वप्यान्नानेक विवरेऽपि च ।
नैको देवाळये नैव रात्रौ तरुतळेऽपि च ॥२३॥

स्त्री को अलग शय्या पर न सुलावे पुरुष के स्थानों में स्त्री को न रक्खे और छिद्रों वाली फटी टूटी शय्या पर शयन न करे रात्रि को देव मन्दिर में अथवा वृक्ष के नीचे अकेला न सोवे ॥ २३ ॥

मूत्रोच्चार समुत्सर्गं दिवा कुर्यादुदङ्मुखः ।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ सन्ध्ययोश्च यथादिवा ॥२४॥

दिन में मल मूत्र का त्याग उत्तराभिमुख हो कर करै और रात को दक्षिण में मुख करके और दोनों सन्ध्याओं में दिन की भांति करें ॥ २४ ॥

छायायामन्धकारे वा रात्रवहनि वा द्विजः ।
यथा सुखं मुखः कुर्यात् प्राण बाधा भयेषु च ॥२५॥

छाया में वा अन्धेरे में चाहे रात हो वा दिन जिधर इच्छा हो मुख करे। तथा प्राणों को बाधा के भय में यथेच्छ मुख करके बैठे ॥२५॥

एवं दिनानि गमयेत्सदाचार परः सदा ।
ततो रात्रि प्रयुक्तानि कुर्य्यात्कर्माणि मानवः ॥२६॥

इस प्रकार सदाचार में तत्पर रह कर दिन व्यतीत करे और रात्रो को रात्री के समयानुकूल कार्य्य करे ॥ २६ ॥

इत्याचारं समासेन भाषितं यः समाचरेत् ।
सविंदत्यायुरारोग्यं प्रीति धर्मं धनं यशः ॥ २७ ॥

संक्षेप से यह जो सदाचार कहा उस के अनुसार जो मनुष्य आचरण करता है उस को आयु आरोग्यता प्रीति धर्म और यश की प्राप्ति होती है ॥ २७ ॥

सत्योपदेश ।

१. हे सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्व शक्तिमान, सर्व हृदयान्तरगत, सर्व व्यापक प्रभो यदि मैं तुझ को यहां आत्मा में नहीं पासका तो किस जगह पा सकूंगा ।

२. सृष्टि के सकल पदार्थ एक विशेष आदर्श की ओर जाते हुये दीखते हैं ।

३. मनुष्य जीवन के प्रति विभाग में हम को प्रतीत होता है कि हर एक क्रिया किसी विशेष आदर्श की ओर है ।

४. जड़ पदार्थ ऐसी क्रिया नहीं कर सकते अतः हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि यह सकल पदार्थ किसी चैतन्य अधिष्ठात्री शक्ति की आज्ञानुसार विचरते हैं ।

५. ब्रह्माण्ड के सकल पदार्थ उच्च स्वर से पुकार रहे हैं कि परमात्मा विद्यमान है ।

६. संसार की सुन्दर वस्तुएँ एक विशेष सौन्दर्य की सत्ता की साक्षी हैं ।

७. प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है ।

८. हरेक पवित्रता उस पवित्रता के स्रोत को दर्शाती है ।

९. जो अन्य पदार्थों के सौंदर्य और उत्तमता का स्रोत है उसी को परमात्मा कहते हैं ।

१०. ईश्वर परिपूर्ण है वह अनन्त है, वह ज्ञान स्वरूप है ।

उस का ज्ञान अनुमान नहीं वरञ्च प्रत्यक्ष है।
११. ज्ञान के अतिरिक्त उस में कृति भी है।
१२. इस कृति के कारण वह अपनी भलाई को दूसरों तक पहुंचाता है और मनुष्यों को अपने स्वरूप में घड़ता है।
१३. भगवान् में ज्ञान और कृति ही नहीं वरञ्च प्रेम भी है।
१४. प्रेम की तुलना इसी से हो सकती है कि प्रेम के विषय में कितनी नेकी है।
१५. वह प्रेम स्वरूप है।
१६. जो कुछ हम अनुभव करते हैं जो कुछ हमारे दृष्टि गोचर होता है वह इसी ईश्वर का विकाश है जो आप छिपा हुवा है।
१७. सारे पदार्थ भगवान् का शब्द हैं और बोलते हैं।
१८. प्रत्येक वस्तु ईश्वर से परिपूर्ण है।
१९. जब कभी हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उस के आभ्यन्तर वास करने वाले भगवान् के कारण से करते हैं।
२०. प्यासा पुरुष जल की अभिलाषा इस लिये करता है कि जल में भगवान् निवास करता है।
२१. मनुष्य को बड़े से बड़ा आनन्द भले कामों के चिन्तन से होता है।
२२. भगवान् केवल उन से प्यार करता है जो अन्याय से घृणा करते हैं।

२३. मूर्ख एक ही अध्यापक से सीखते हैं और वह है विपत्ति।
२४. वह पुरुष जिस से सारे डरते हैं सब से डरता है।
२५. मेरे लिये कर्तव्य वह है जो मुझे भाता है।
२६. एक काम का करना ही पर्याप्त नहीं परन्तु आवश्यक है कि हम इसे सोच विचार कर करें।
२७. सदाचारी जीवन में सब से बड़ा धर्म यह है कि मनुष्य अपने आप को जाने।
२८. सच्ची तपस्या इन्द्रिय संयम और दम है।
२९. हमारे अन्दर देवासुर संग्राम हो रहा है। असुर प्रत्येक की अवस्था में विशेष दुर्बल अंश को ढूंढते हैं और उस पर प्रहार करते हैं।
३०. एक पुरुष की अवस्था में यह अंश काम दूसरे की अवस्था में क्रोध और तीसरे की अवस्था में कोई और अंश होता है।
३१. जो मनुष्य अपने आप को नहीं जानता वह अपने दुर्बल अंश को नहीं जानता और इन्द्रियों को वश में रखने के अयोग्य है।
३२. मनुष्य का सारा जीवन चेष्ठा का प्रकाश है।
३३. जब कभी हम चेष्टा करते हैं तो किसी त्रुटी को दूर करने के लिये करते हैं।
३४. त्रुटी दुःखों का मूल है।
३५. जब एक न्यूनता दूर होती है तो स्वभाविक एक नई

न्यूनता उत्पन्न हो जाती है।

३६. विषयों की तृप्ति से अपने आप को शान्त करना ऐसा ही सम्भव है जैसा घृत के छींटों से अग्नि को बुझाना।

३७. निर्वाण जीवन का आदर्श है।

३८. जीवन का उद्देश्य जीवन दीर्घ करना नहीं वरंच जीवन के बन्धन से मुक्त होना है।

३९. जगत में सुख से दुःख अधिक है और ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता जाता है दुःख बढ़ता जाता है।

४०. यदि हम कबरों को ठोकर लगावें और मुर्दों से पूछें कि वोह जीवित होना चाहते हैं या नहीं तो वह शिर हिलादेंगे। (सोपन हायर)

४१. तुम इस प्रकार काम करो कि अपने काम के नियम को सर्वगत नियम बनाने की चेष्टा कर सको।

४२. हमारे काम का उद्देश्य किसी और उद्देश्य का साधन होने के स्थान में स्वयं साध्य होना चाहिये।

४३. इस तरह काम करो कि मनुष्यत्व तुम्हारी अपनी अवस्था में या किसी और की अवस्था में साधन की न्याईं बर्ताव में न लाया जाय वरंच आन्तम उद्देश्य समझा जाय।

४४. जो कुछ संसार में होता है वह भावों के आधीन है। ऐसी अवस्था में हम क्यों चिन्ता करें।

४५. अडोल चित्त होना, सिर आई को शान्ति से सहना,

भगवान् के साथ प्रेम करना यही जीवन का मुख्योद्देश्य है।

४६. ईश्वर की उपासना जन्म और प्रकृति की उपासना मरण है।

४७. विद्या जीवन और अविद्या मृत्यु है।

४८. सत्य जीवन और झूठ मरण है।

४९. धर्म जीवन और अधर्म मरण है।

५०. परोपकार जीवन और स्वार्थ मरण है।

५१. पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मरण है।

५२. ब्रह्मचर्य्य जीवन और व्यभिचार मरण है।

५३. सदाचरण जीवन और सजावट मरण है।

५४. एकता जीवन और विरोध मरण है।

५५. मित्रता जीवन और शत्रुता मरण है।

५६. वीरता जीवन और कायरता मरण है।

५७. सत्संग जीवन और कुसंग मरण है।

५८. संतोष जीवन और लोभ मरण है।

५९. अहिंसा जीवन और हिंसा मरण है।

६०. कृतज्ञता जीवन कृतघ्नता मरण है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता और मौत से डरता है, इस कारण उपरोक्त मौत के साधनों से घृणा करनी उचित है।

६१. एक परमात्मा को सर्वोपरि इष्ट देव मानना, उसी की

पूजा करना, सम्पूर्ण कर्म और जीवन का आधार समझना, उस के पवित्र नाम का गुप्त जप करना और उस पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये।

६२. ईश्वर, जीव और माया शान्त अनादि हैं और ब्रह्म अनन्त अनादि है।

६३. मुक्ति अनन्त और अपार है। त्रिविधा दुःख की अत्यन्त निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति रूप है।

६४. कर्मों के अनुसार उन्नति पूर्वक शुभाशुभ जन्म मानना चाहिये।

६५. अवतार, मूर्त्तिपूजा, तीर्थ, श्राद्ध आदि पुरानी बातों को जो बुद्धि के अनुकूल हों मानना चाहिये।

६६. वेद शास्त्र आदि सर्व प्रमाण ग्रन्थों की अच्छी बातों को जो बुद्धि के अनुकूल हों मानना चाहिये

६७. सर्व विद्या और समस्त पुस्तकों के पढ़ने में मनुष्य मात्र का अधिकार होना चाहिये।

६८ एक मनुष्य जाति है और जैसा करता है बैसा बनता है जन्म से कोई अच्छा बुरा नहीं होता। इस में जाति पांति ऊंच-नींच का कोई भेद न होना चाहिये।

६९ अध्यात्म विद्या में गीता उपनिषद का नित्य पाठ करना चाहिये।

७०. आलस्य छोड़ कर आजन्म विद्याध्यन करना चाहिये।

७१. सब काम समय पर करना चाहिये।
७२. चार वार सन्ध्या करनी चाहिये।
७३. ईश्वर को और मौत को याद रखना चाहिये।
७४. भगवान के दर्शन करने के लिये योगाभ्यास करना चाहिये।
७५. देश, नरेश, महेश की भक्ति करनी चाहिये।
७६. सब मतों को, उन की पुस्तकों को, उन के अवतार तथा पीर पैग़म्बरों को और अन्य देशों के मनुष्यों को समान दृष्टि से देखना चाहिये। सब को अपना आत्मा समझना चाहिये और परस्पर का भेद झूठा समझना चाहिये।
७७. प्यारा, हितकर, सच्चा और मधुर भाषण करना चाहिये।
७८. अपने घर पर आये हुवे अतिथि का यथायोग्य पूजन करना चाहिये।
७९. आपत्ति आने पर आनन्द में मग्न रहना चाहिये।
८०. अपने साथ में की हुई दूसरे की बुराई को और दूसरे के साथ में किये हुवे अपने गुण को भूल जाना चाहिये।
८१. सम्पूर्ण कर्मों का फल परमात्मा को अर्पण करना चाहिये।
८२. प्रारब्ध से पुरुषार्थ को बड़ा समझना चाहिये।
८३. बलवान की अपेक्षा निर्बलों को विशेष सुभीता देना चाहिये।

८४. मन वाणि और कर्म से सब को सुख पहुंचाना चाहिए।
८५. गौ रक्षा के लिये उत्तम नसल उत्पन्न करके दुधार बनानी चाहिये। और गोचर भूमि छुड़वाना चाहिये।
८६. विषयों के आधीन न होना चाहिये। अधिक उपाधि नहीं बढ़ानी चाहिये। सारासार का विचार करते रहना चाहिये। साधु सज्जनों के सत्संग में जाना चाहिये। अधिक सतान न बढानी चाहिये।
८७. जिसे अपने लिये चाहे उसे दूसरे के लिये करना चाहिये।
८८. हर काम सब की भलाई के लिये पवित्र आकांक्षा से करना चाहिये।
८९. दूसरों की बडाई सुन कर प्रसन्न होना चाहिये।
९०. पड़ोसी का मान आदर करना चाहिये।
९१. खान पान प्रेम और शुद्धताई के साथ मनुष्य मात्र का कर लेना चाहिये।
९२. दो बार हांडी का और एक बार चूल्हे का पका खाना चाहिये।
९३. मीठा भोजन दूसरे को खिला कर खाना चाहिये।
९४. मोटा खाना और मोटा पहरना चाहिये।
९५. बहुत भूख लगे तब खाना चाहिये और बहुत नींद आवे तब सोना चाहिये।
९६. सात्विक पदार्थ जो बुद्धि इत्यादि को बढावें भोजन

करना चाहिये ।

९७. विवाह स्वयंवर की रीति से जाति पांति के विचार बिना लड़का लड़की के परस्पर प्रेम होने पर उन की इच्छानुसार होना चाहिये ।

९८. एक पुरुष को एक ही स्त्री के साथ विवाह करना चाहिये आवश्यक्ता होने पर दूसरी से भी । विवाह सम्बन्ध में जो पुरुष का अधिकार हैं वही स्त्री को भी होने चाहियें ।

९९. हर विषय में स्त्री पुरुषों के समानाधिकार होने चाहियें।

१००. स्त्रियों का आदर मान करना चाहिये और उन्हें प्रणाम करनी चाहिये । पैर की जूती समझने की अपेक्षा शिर का मुकुट समझना चाहिये । इस के स्मरणार्थ " गौरी शंकर सीता राम राधे श्याम श्यामा श्याम " इस मन्त्र का जप करना चाहिये ।

१०१. स्त्री को पतिव्रत धर्म और पुरुष को नारिव्रत धर्म पालन करना चाहिये ।

१०२. स्त्री पुरुषों को ऋतुगामी होना चाहिये ।

१०३. अच्छे २ लाभ दायक पूज्य उत्तम वृक्ष लगाने चाहिये । वृक्षों तथा औषधियों की नसल बढ़ा कर प्रभूत फल देने वाले बनाने चाहियें ।

१०४. तालाब कूंवा मन्दिर प्याऊ आदि बनवानें चाहियें ।

१०५. ब्याज थोड़ा लेना चाहिये ।

१०६. देश और धर्म के लाभ को विचारते हुवे व्यापार करना चाहिये।

१०७. दश दश पांच २ ग्रामों के मध्य में एक एक आश्रम बनाना चाहिये और वहां ही जंगल में लड़के लड़कियों की पाटशाला होनी चाहिये।

१०८. कभी २ नांचना ओर गाना भी चाहिये।

१०९. वृद्ध मां बाप की सेवा करनी चाहिये।

११०. मुकट दार टोपी तथा टोप पहनना चाहिये।

१११. बालकों को खेल के द्वारा विद्या सिखाना चाहिये।

११२. सब को बांसुरी बजाना चाहिये।

११३ ब्रह्म मुहूर्त्त में उठना चाहिये।

११४. किसी काम को अकेली ही न सोच कर दूसरे की सलाह करनी चाहिये।

११५. अपने पापों को प्रकट कर शुभ कर्मों को छिपाना चाहिये।

११६. ऋण से मुक्त रहना चाहिये।

११७. जैसे तुरत की व्याई गौ अपने बच्छे से प्यार करती है वैसे ही सब से वर्त्तना चहिये

११८. अपने लाभ में दसवां भाग पुण्य करना चाहिये।

११९. रात को मुंह उघाड़ कर सोना चाहिये।

१२०. रात को दक्षिण की ओर, दिन में उत्तर की ओर, और

दोनों सन्ध्याओं में उत्तर को मुख करके मलमूत्र का विसर्जन करना चाहिये।

१२१. एक हाथ से शिर खुजाना चानिये।

१२२. मनुष्य को अपनी स्वतन्त्रता से ऐसा धर्म स्वीकार करना चाहिए। जिस में प्रीति उत्साह निर्भयता होवे।

१२३. थोड़ा बोलना चाहिए और कभी २ मौन भी रखना चाहिए।

१२४. धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शान्ति शौच इन्द्रिय निग्रह करना चाहिए, सुखियों से मित्रता, दुःखियों पर दया, साधुवों के साथ मुदिता, और दुर्जनों के साथ उपेक्षा करनी चाहिए।

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

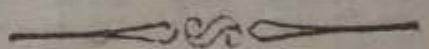

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये पांच कुप और एक तालाब है। तालाब में पक्के घाट बनाये गए हैं। १०० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगा कर उपवन बनाया गया है। आश्रम से लगी हुई ५०० बीघा भूमि गौओं के चरने के लिए श्री० लेफ्टो.

सेन्ट राव बहादुर राव बलबीर सिंह जी ने आश्रम को प्रदान की है।

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, कन्या पाठशाला वा अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियों के ठहरने का स्थान व पुस्तकालय है।

* ब्रह्मचर्याश्रम *

इस समय आश्रम में २० ब्रह्मचारी हैं। यह प्राचीन ऋषियों की भांति गुरुजनों की सेवा व स्वावलम्बन का जीवन व्यतीत करते हुये विद्योपार्जन करते हैं इन का भोजन व रहन सहन इतना सादा है कि एक ब्रह्मचारी का समस्त खर्च ५) मासिक है। स्वावलम्बी इतने हैं कि इन्होंने एक ६५ फीट गहरा कूप स्वयं ही खोद लिया है। संस्कृत, देवनागरी, इत्यादि सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है। व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है।

कन्यापाठशाला—इनका जीवन भी बहुत सादा व तप का बनाया जाता है। संस्कृत, देवनागरी, गणित की शिक्षा इनको दी जाती है रामायण व गीता इनके मुख्य ग्रन्थ हैं।

अछूत पाठशाला में निकट वर्ती ग्रामों के बालक पढने आते हैं। अछूतों को आश्रम में रखनेका विचार हो रहा है। पुस्तकालय आरम्भिक अवस्था में है। धार्मिक ग्रन्थों

का साधारण संग्रह हुवा है, हां एकान्त शान्त स्थ
कारण यह छोटा पुस्तकालय भी बड़ा उपयोगी है। राम
आश्रम की भान्ति दादरी गढीबोलनी जोड़िया खेंटाव
निखरी नूरगढ़ खोयरी पालम भटिण्डा आदि अन्य स्थ
भी आश्रम खोले गये हैं।

हुआ है, हां एकान्त शान्त
के भी बड़ा उपयोगी है।
री गढ़ीवाली ओढ़िया
ाल्म मंदिरद्वारा आदि अन्य

भूमानन्द ब्रह्मचारी के प्रबन्ध से "भक्ति प्रेस" श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी) में मुद्रित।